॥ [illegible] ॥

स्वल्पालाप गायन.

प्रथम भाग.

संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक.

श्रीमान पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्युझिक, प्रिन्सिपॉल,

गांधर्व महा विद्यालय—बंबई द्वारा रचित.

सन १९२३.

द्वितीय वृत्ति] प्रती २००० [मूल्य १ रुपया.

"गांधर्व महा विद्यालय" प्रे[illegible]

अनुक्रमणिका.

भवदीय,

विष्णु दिगंबर.

॥ श्रीगुरुदत्त प्रसन्न ॥

स्वल्पालाप गायन.

राग छायालगत्व भैरवी, नं. १.

इस राग में गंधार, धैवत और निषाद अतिकोमल. ऋषभ दो एक शुद्ध और दूसरा अतिकोमल. मध्यम दो एक शुद्ध और दूसरा तीव्रतर. शुद्ध ऋषभ और तीव्रतर मध्यम के वास्ते निशानी होगी.

सरस्वती शारदा विद्यादानी दयानी दुःख हरनी जगत जननी ज्वाला मुखी माता। किजे सुदृष्टी सेवक जान इतनो अपनोकर बक्स दीजे तान ताल कर सुहाग बुध आलंकार ॥

(सरस्वती शारदा) इस गीत पर निम्न लिखित आलाप, गाने के साथ तथा ताल के साथ लेना.

ताल तीनताल.

——:0:——

तार		
मध्य	म ग रि स स स	ध . ९ ६ रि ग म ▲ म म
मन्द्र	नि	

स र स्व ती शा . र दा   आ . . स र

३   २   १   २   ३

तार		
मध्य	ग रि . स ऽ स स स . ऽ	स ग म प ध प
मन्द्र	नि	नि

स्व . ती शा . र दा आ . . . . . .

२ १ २

तार		
मध्य	म ग . ऽ म ग रि स ऽ ा	स ग म प ध नि ध
मन्द्र		नि

. . स र स्व ती आ . . . . . .

३ २ १ २

तार		सं
मध्य	प . म ग म ग रि स ऽ ा	स ग म प ध नि
मन्द्र		नि

. . . स र स्व ती आ . . . .

३ २ १ २

तार		
मध्य	नि ध प म ग ४ म ग रि स ०।	स ग म प
मन्द्र		नि

. . . . . . स र स्व ती आ . . . .
३ २ ✳ १

तार	स ग स	
मध्य	ध नि नि ध प म ग ४	म ग रि स
मन्द्र		

. . . . स र स्व ती
२ ३ २

तार		स स ४	स
मध्य	स स	ध . ०। प ध नि	नि ध . नि
मन्द्र	नि		

शा . र दा की जे सु द्द ष्टी ई . . .
१ २ ३ २ १ २ ३

तार	स॒ ॰ ९	रि सु	सु रि ॰ स॒ ॰ ९	
मध्य	धु ॰	निधुनि		स॒ नि
मन्द्र				

॰ ॰ ई ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ई ॰

२ १२३ ✻२ १

तार	सु सु ॰ ४ सस॒ सु ४	
मध्य	धु ॰ नि ॰ म॒ ध॒ नि	मु गु रि स॒
मन्द्र		

॰ ॰ ॰ ॰ कि जे सु द्द घी स र स्व ती

२ ३ २ ३ २

तार		
मध्य	सु सु	धु ॰ ४ सु गु मु पु धु पु मु गु रि सु
मन्द्र	नि	नि

शा ॰ र दा आ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰

१ २

तार		
मध्य	स ॅ म ग रि स स स	ध • ४ स ग म प ध
मन्द्र	नि	नि

• स र स्व ती शा • र दा आ • • • • •

३ २ १ २

तार		
मध्य	नि ध प म ग रि म ग रि स स स	ध • ४
मन्द्र	नि	नि

• • • • • • • स र स्व ती शा • र दा आ

३ २ १

तार	स
मध्य	स ग म प ध नि नि ध प म म ग रि
मन्द्र	

• • • • • • • • • • • • स र स्व

२ ३

तार		स ग रि स
मध्य	स ॰ स ग म	प ध नि नि
मन्द्र	नि	

ती आ . . . .
२ १

तार	
मध्य	ध प म रि स ४ म ग रि स स स
मन्द्र	नि

. . . . स र स्व ती शा . र
२ ३ २

अध्यापकों के लिये सूचना–इस के आगे अस्ताई और अंतर की दूगण सीखलानी.

राग कौशिया, नं. २.

इस रागमें सब शुद्ध स्वर लगते है.

केही कहो विपती अतिभारी रघुवीर दीन हितकारी।
मम हृदय भवन प्रभु तोरा तह आय बसे बहु चोरा॥

आगे के आलाप (केही कहो विपती) इस गीन पर लेना.

ताल तीनताल.

——:०:——

तार		
मध्य	स स॰४	स रि ग स॰४
मन्द्र	प ध प नि नि	प नि नि

के ही क हो वि प ती आ . . . . . .
३ २ १ २

तार		
मध्य		स रि ग स रि म ग रि स॰४
मन्द्र	प ध प नि ा प नि	नि

के ही क हो आ . . . .
३ २ १ २

तार		
मध्य	स रि	ग स रि प म ग रि
मन्द्र	प ध प नि प नि	नि

के ही क हो आ . . . .
३ २ १ २

*

तार		
मध्य	स॒ •ॅ स॒ स	स॒ स
मन्द्र	प॒ ध॒ प॒ नि॒ नि॒	प॒ ध॒ प॒ नि॒ नि॒

. के ही क हो वि प ती के ही क हो वि प ती
३ २ ३ २

तार		
मध्य	रि॒ ग॒ स स॒ रि॒ स॒ म॒ ग॒ ग॒ ग॒ ग॒	ग • रि॒
मन्द्र	नि •ॢ	

आ ती भा री म म हृ द य भ व न आ .
१ २ ३ २ १

तार	
मध्य	ग॒ स॒ ग॒ रि॒ स॒ •ॅ स॒ रि॒ स॒ म॒ ग॒ ग॒ ग॒ ग॒
मन्द्र	नि॒

. . . . . म म हृ द य भ व न
२ ३ २

तार	
मध्य	सगमपगमरिगसरिसमगगगग
मन्द्र	नि

आ . . . . म म हृ द य भ व न

१ २ ३ २

तार	
मध्य	मगरिसरिगमरिग . ४ सरिसमगगगग
मन्द्र	

आ . . . . म म हृ द य भ व न

१ २ ३ २

तार	
मध्य	मपपगम . गरिग . ४ सरिरिरिग
मन्द्र	नि

प्र भु तो . . रा . . त हृ आ य ब से .

१ २ ३ २

तार		
मध्य	म प ध	म ग रि ग रि स ४ रि ग म ग रि स
मन्द्र		नि

. . . . . . ब हु चो . . रा . . . . .

१ २

तार		
मध्य	स स	रि ग स
मन्द्र	प ध प नि नि	नि ॰ १ प ध प नि

के ही क हो वि प ती आ ती भा री के ही क हो

३ २ १ २ ३

तार		
मध्य	स स	७ स रि ग म ग रि स
मन्द्र	नि	नि प ध प नि

वि प ती आ . . . . के ही क हो

२ १ २ ३

तार		
मध्य	स़ स ऽ	सरिगमपमग रिस़ ॰
मन्द्र	नि़	नि प़ ध़ प़

विपती आ . . . . के ही क
२ १ २ ३

तार		
मध्य	स़ स	स रि ग म प ध नि नि ध प
मन्द्र	नि़ नि़	नि

हो विपती आ . . . .
२ १ २

तार	
मध्य	म ग रि स ॰ ॅ स़ स
मन्द्र	प़ ध़ प़ नि़ नि़

. . . . के ही क हो वि प ती
३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की
बूगण सीखलानां।

राग झिंजोटी, नं. ३.

इस राग में दो गंधार और दो निषाद लगते है. एक शुद्ध और दूसरा अतिकोमल फक्त अतिकोमल गंधार और अतिकोमल निषाद के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो।
सम दरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो।
इकनदिया इक नाल कहावत मैलोहि नीर भरो ॥
आगे के आलाप (प्रभु मोरे अवगुण) इस गीत पर लेना.

ताल तीनताल.

तार		
मध्य	ग ग म प ग म म म ४	ग म प ध ४ नि प ४
मन्द्र		

प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . . . .
२ ३ २ १

तार		सं
मध्य	ग ग म प ग म म म ४	ग म प ध ४ नि प ४
मन्द्र		

प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . . . . .
२ ३ २ १

तार		सा रि
मध्य	ग ग म प ग म म म । ग म प ध	४नि
मन्द्र		

प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . . . . .
२ ३ २ १

तार	
मध्य	४नि ध प ४ग ग म प ग म म म ग म प ध
मन्द्र	

. . . प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . .
२ ३ २

तार	सा रि ४ग	४ रि
मध्य	४नि	४नि ध प . ग ग म प
मन्द्र		

. . . . प्र भु मो रे
१ २

तार	
मध्य	धु ४ नि धु गु मु गु गु मु पु मु रि गु रि गु सु रि
मन्द्र	

. . . अ व गु ण . . . चि त . . न ध
३ २

तार	
मध्य	पु . ४ गु मु पु धु ४ नि धु गु गु मु पु गु मु
मन्द्र	

रो . . . . . . प्र भु मो र अ व
१ २ ३

तार		
मध्य	गु मु रि ४ गु सु रि	पु . १ नि नि नि नि नि नि
मन्द्र		

गु ण चि त न ध रो इ क न दी या इ
२ १ २

तार	स स स स स स स	स
मध्य	नि	ध ४ नि ध नि नि नि
मन्द्र		

क ना ले क हा व त आ . . . . इ क न
३ २ : १ २

तार	स स स स स स स रि ४ ग
मध्य	नि नि नि नि प ध
मन्द्र	

दी या इ क ना ले क हा व त आ . . . .
३ २

तार	रि स	? स . ४
मध्य	नि	नि ध . नि नि नि नि नि नि नि
मन्द्र		

. . . . इ क न दी या इ क
१ २

तार	सु सु सु सु सु सु सरिगसरिप ४गुरिसु •
मध्य	पुधु
मन्द्र	

ना ले क हा व त आ . . . .

३ २ १

तार	सु • ४ सु सु सु सु
मध्य	नि धु • निनिनि निनि निनि
मन्द्र	

. . .   इ क न दी या इ क ना ले क हा

२ ३

तार	सुसु सुरि
मध्य	नि ४नि ४नि ४नि धु पु धुमुसु •
मन्द्र	

व त . . .   मैं लो ही नी . . र भ

२

तार	सा
मध्य	प ॰ ४ ग म प ध नि ग ग म प ग म म म ॰
मन्द्र	

रो . . . . प्र भु मो रे अ व गु ण

१ २ ३ २

तार	
मध्य	ग म प ध ४ नि ध प म ग रि ॰ ग ग म प
मन्द्र	

आ . . . . प्र भु मो रे

१ २

तार		सा
मध्य	ग म म म ॰	ग म प ध नि ४ नि ध प म
मन्द्र		

अ व गु ण आ . . . .

३ २ १

तार	
मध्य	ग ग ग म प ग म म म ग म प ध
मन्द्र	

. प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . .
२ ३ २

तार	स	रि ग रि स
मध्य	नि	नि ध प म ग
मन्द्र		

. . . .
१

तार	
मध्य	रि ग ग म प ग म म म
मन्द्र	

. प्र भु मो रे अ व गु ण
२ ३

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की दुगण सीखलानी.

राग खमाज, नंबर. ४.

इस राग में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध व दूसरा अतिकोमल. अतिकोमल नि के वास्ते निशानी होगी, बाकी के सब शुद्ध स्वर.

हम भक्तन के भक्त हमारे सुन अरजुन पर
तिज्ञा मोरी यह व्रत टरत न टारे।
भक्तन काज लाज हिय धरके पाय पियादे धाये ॥

आगे के आलाप (हम भक्तन के) इस गीत पर लेना.
ताल तीनताल.

तार		सं सं संरिं
मध्य	४नि ध ग ग म प ध	नि नि नि ४नि ध
मन्द्र		

ह म भ क्त न के . भ क्त ह मा रे . . ह म
३ २ १ २ ३

तार		
मध्य	ग ग म प ध	स ग म प ग म रि ग ४ ४नि ध
मन्द्र		

भ क्त न के . आ . . . . ह म
२ १ २ ३

तार		
मध्य	ग ग म प ध	स ग म प ध ग म रि ग ऽ ऽ नि ध
मन्द्र		

भ क्त न के . आ . . . . ह म

२ १ ० ३

तार		स
मध्य	ग ग म प ध	ग म प ध नि ऽ नि ध प ग म
मन्द्र		

भ क्त न के . आ . . . .

२ १ २

तार		स
मध्य	ग . ऽ ऽ नि ध ग ग म प ध	ग म प ध नि
मन्द्र		

. ह म भ क्त न के . आ . . . . .

३ २ १

तार	स स स	ऽ स रि रि स • ४ स • स१
मध्य		नि नि नि ध
मन्द्र		

का ज ला ज हि य ध र के आ . . .

२ १ २ ३ २

तार	स रि	ग स रि स • ४
मध्य	प ध	नि ४ नि ध प म ४ नि ध
मन्द्र		

. . . .

१ २

तार	स स स	ऽ स रि रि रि स ४
मध्य	म ध नि	नि नि नि
मन्द्र		

भ क्त न क। ज ला ज हि य ध र के . .

३ २ १ २

तार	१सु गु गु मु रिगु सु रि ०४	सु सु ०४
मध्य	नि	नि नि४
मन्द्र		

पा . य पी या . हे . . धा ये . .

३ २ १ २

तार	सु रि४
मध्य	नि ४नि पु धु पुमु गु रि गु ०४गु मु पुधु
मन्द्र	

. . . ह म . भ . . . . क्त न के .

३ २

तार	सु सरि गरिसु
मध्य	१नि नि पु धु ४नि धु ४नि धु
मन्द्र	

भ क्त ह मा . . . . . रे . . हं म

१ २ ३

तार		
मध्य	ग ग म प ध	ग म प ध नि ध प म ग नि
मन्द्र		

भ क्त न क • आ • • • • • • • • •

२ १ २ ।

तार		सं
मध्य	ग • नि ध ग ग म प ध	ग म प ध नि
मन्द्र		

• ह म भ क्त न के • आ • • • •

३ २ १ २

तार	
मध्य	नि ध प म ग • नि ध ग ग म प ध
मन्द्र	

• • • • • ह म भ क्त न के •

३ २

तार	सा रि गा मा गा रि सा
मध्य	गु मु पु धु नि
मन्द्र	

आ . . . .
१ २

तार	
मध्य	४नि धु पु मु ४नि धु ग ग मु पु धु
मन्द्र	

. . . . . ह म भ क्त न के .
३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की कूगण सीखलानी.

राग भूपाली, नंबर ५.

इस राग में मध्यम, निषाद वर्ज. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

गाईये गणपति जगवंदन शंकर सुमन भवानी नंदन।
सिद्धि सदन गजवदन विनायक कृपा सिंधु सुंदर सब लायक॥

आगे के आलाप (गाईये गणपती) इस गीत पर लेना.
ताल तीनताल.

—:0:—

तार	स	स
मध्य	धपगरिसरिगगपगग॰	धप
मन्द्र		

गा ई य ग ण प ती ज ग वं द न गा ई ये
३ २ १ २ ३

तार		स
मध्य	गरिसरि	ासरि स॰ धपगरिसरि
मन्द्र		ध

ग ण प ती आ . . . गा ई ये ग ण प ती
२ १ २ ३ २

तार	स
मध्य	सरिगपधपगरिस॰ धपगरिसरि
मन्द्र	

आ . . . . गा ई ये ग णा प ती
१ २ ३ २

तार	स॒. स
मध्य	स॒ रि॒ ग॒ प॒ ध॒ ध॒ प॒ ग॒ रि॒४ ध॒ प॒ा स॒ रि॒ ग॒ प॒
मन्द्र	

आ . . . . गा ई ये आ . . .

१ २ ३ २

तार	स॒ रि॒ स॒ स स॒
मध्य	ध॒ ध॒ प॒ ग॒ रि॒ स॒४ ध॒ प॒ स॒ रि॒ ग॒ प॒ ध॒
मन्द्र	

. . . . गा ई ये आ . . . . .

१ २ ३ २

तार	रि॒ ग॒	ऽ रि॒ स॒ स
मध्य		ध॒ ऽ ग॒ रि॒ स॒४ ध॒ प॒ ग॒ रि॒ स॒ रि॒
मन्द्र		

. . . . गा ई यें ग ण प ता

१ २ ३ २

तार	स	स
मध्य	ग ग प ग ग ० ० ग ग रि ० ग प ध	ध
मन्द्र		

ज ग वं द न शं क र सु म न भ वा .
१ २ ३ २ १

तार	स ०४ सरिगरिसस स स
मध्य	पध धप ध धपग
मन्द्र	

नी नं . . . . . द . न . गा . . ई ग्रे ग
२ ३ २

तार		स
मध्य	रि ग रि स स स रि	ग ग प ग ग० ग प ध
मन्द्र		

. ण . प . ती . ज ग वं द न सी द्धी स द
१ २ ३ २

तार	सुसुसु	सुरिगुरिसरिसु सुसु T
मध्य		गपुधु
मन्द्र		

न ग ज व द न वि ना य क सीद्धी स द् न
१ २ ३ २

तार	सुसु सु • ४ सुसु T	सुरि • स१
मध्य	धु • गपुधु	धु
मन्द्र		

आ . . . सीद्धी स द् न आ . . .
१ २ ३ २ १ २

तार	सुसु • ४ सुरि	गुरिसुरिसु
मध्य	गपुधु पुधु	धु •
मन्द्र		

सीद्धी स द् न आ . . . .
३ २ १ २

तार	स ऽ ४ सुसुसुसु सुसु रिरि गु गु रि
मध्य	ग पु धु
मन्द्र	

. सी ढ्ढी ल द न ग ज व द . न . वी ना
३ २ १ २

तार	सु॰ रि सु सु सु १ रि सु
मध्य	धु॰ धु धु॰१ पु॰४ प धु
मन्द्र	

. य क कृ पा . सिं धू सुं द र .
३ २ १

तार	स
मध्य	धु धु॰पु गु रि॰सु सु॰४ धु पु गु रि सु रि
मन्द्र	

स . ब ला . य क गा ई ये ग ण प ती
२ ३ २

तार	स
मध्य	ऽ स रि ग प ध ध प ग रि स ४ ध प ग रि स रि
मन्द्र	
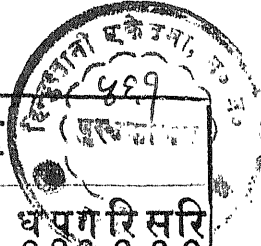
आ . . . . ग ई ये ग ण प ती

१ २ ३ २

तार	स स स
मध्य	स रि ग प ध ध प प ग रि स . ४ ध प ग रि
मन्द्र	

आ . . . . गा ई ये ग ण

१ २ ३ २

तार		स रि रि स स
मध्य	स रि	स रे ग प ध ध प प ग रि स
मन्द्र		

प ती आ . . . .

१ २

तार	स	स रि ग ग रि स स
मध्य	ध प ा स रि ग प	ध
मन्द्र		

गा ई ये आ . . . .
३ २ १

तार	स
मध्य	ध प प ग रि स४ ध प ग रि स रि
मन्द्र	

. . . . गा ई ये ग ण प ती
२ ३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की दुगण सिखलानी.

राग बिहाग, नंबर ६.

इस राग में दो मध्यम, एक शुद्ध दूसरा तीव्रतर, तीव्रतर, मध्यम के वास्ते निशानी होगी. आरोह में ऋषभ और धैवत वर्ज. बाकी के सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

नाम जपन क्यों छोड दिया क्रोध न छोडा झूट न छोडा सत्य बचन क्यों छोड दिया। झूट जगम दिल लल चाकर असल वतन क्यों छोड दिया कौडी का तो खूब समाला लाल रतन क्यों छोड दीया॥

आगे के आलाप (नाम जपन क्यों) इस गीत पर लेना.
ताल तीनताल.

तार		
मध्य	ग ग ग ग म ध ▲म प	म ग रि रि सा ग ग
मन्द्र		नि

ना म ज प न क्यौं . . छो ड दि या . . ना म
३ २ १ २ ३

तार		
मध्य	ग ग म ध ▲म प	सा ग रि सा • ४ ग ग ग
मन्द्र		नि

ज प न क्यौं . . आ . . . . ना म ज
२ १ २ ३

तार		
मध्य	ग म ध ▲म प	सा ग प • ▲म ग म ग • ४ ग ग
मन्द्र		

प न क्यौं . . आ . . . . . ना म
२ १ २ ३

तार		
मध्य	ग ग म ध ᐃम प	ऽ सगपनिध ᐃमप ᐃमग
मन्द्र		

ज प न क्यौ . . आ . . . .
२ १ २ ३

तार		
मध्य	मग ॰ऽ गम	ध ᐃम प ᐃमग म ग रि स॰ऽ
मन्द्र		नि

. . . .
२ १ २

तार		स
मध्य	ग ग ग ग म स ग म	प निध ᐃमप ᐃम
मन्द्र	नि	

ना म ज प न आ . . . .
३ २ १

तार		सु गु॰
मध्य	गु मुगु ॰ग गु गु गु मु सुगुमु	पु नि
मन्द्र	नि	

. . . ना म ज प न आ . . . . . .

२ ३ २ १

तार	रि
मध्य	निनि धु सु पु मुगु मुगु ग गु गुगुमु धु
मन्द्र	

. . . . ना म ज प न क्यों

२ ३ २

तार		
मध्य	सु पु	गुमु रि गु रि सु ॰ T॰
मन्द्र		नि पुनिनि

. . छा ॰ ड दि या . क्रो ध न

१ २ ३

तार	स	स॰ स॰४
मध्य	गमपनिनिनि	निपनि गमप
मन्द्र		

झु . टे . ज ग मे आ . . . . झु . टे
३ २ १ २ ३

तार	स॰४	सगरि स स॰४
मध्य	नि नि नि	नि निपनि
मन्द्र		

. ज ग मे आ . . . .
२ १ २

तार	स॰४	सरिस
मध्य	गमपनिनिनि	नि नि धमप
मन्द्र		

झु . टे . ज ग मे दि ल ल ल चा क . र
३ २ १ २ ३

तार	सुसुसु .५	सुरिसु
मध्य	नि नि नि नि	नि नि धु ▲ मु
मन्द्र		

अ स ल व त न क्यौं छों . . ड दी या .

२ १ २

तार		रि सु
मध्य	पु .१ मु गुमु पु नि१	नि नि नि . धु ▲ मु
मन्द्र		

. को डी . को तो खु . व स मा . ला

३ २ १ २

तार		सु गुमु गुरिसु
मध्य	पु .४ सु गुमु पुपु नि .४	नि निधु
मन्द्र		

. ला ल र त न क्यौं को ड दी . या . . . .

३ २ १ २

तार		सरिस
मध्य	प ऽमप ग गग गम ध ऽमप	गमपनि
मन्द्र		

. . . नामजपनक्यौ . . आ . . . . . .
३ २ १

तार		
मध्य	निधप मग रिस ४ग गग गगम ध ऽमप	गमप
मन्द्र		

. . . . नामजपनक्यौ . . आ . .
२ ३ २ १

तार	सगरिस
मध्य	नि निधपमगरिस ४ग ग ग ग
मन्द्र	

. . . . नामजप
२ ३ २

तार		सं गं मं पं मं गं रिं सं
मध्य	स ग म प नि	नि ध
मन्द्र		

न आ . . . .
१ २

तार	
मध्य	प म ग रि स .ऽ ग ग ग ग म ध △ म प
मन्द्र	

. . . . . . ना म ज प न क्यों . .
३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतर की दुगण सिखलानी.

राग झिंझोटी, नंबर ७.

इस राग में दो गंधार दो निषाद, अतिकोमल गंधार और अतिकोमल निषाद के वास्ते निशाणी होगी.

बार बार समजाय रही मे मानलेरे मन मेरी कहीको ।
दुख सुखसो बीती सो बीती यादन करबर बात बहीको ॥

आगे के आलाप (बार बार समजाय) इस गीत पर लेना
विलंबित तीनताल.

तार		
मध्य	प ग म म प म रि ५ ग ५ ग स रि ० १	प ५ नि
मन्द्र		

बा र बा र स म जा य र ही मै बा र
१ २ ३ २ १

तार	
मध्य	ध ० प म ग ० स प ध म प ५ ग रि ० I ५ ग ० ५
मन्द्र	

. बा . . र स . म . जा . य
२ ३

तार	
मध्य	स रि म प ध ५ नि प ध म प ५ ग म रि ५ ग ५
मन्द्र	

आ . . . .
२

तार	स
मध्य	प नि ध . प म ग . म स रि म प ध नि
मन्द्र	

बा र . वा . . र आ . . . . . .

१ २ ३

तार		
मध्य	ध नि प ध म ग म रि ग म रि .	प नि
मन्द्र		

. . . . बा र

२ १

तार	स रि ग स रि
मध्य	ध . प म ग . स स रि म प ध
मन्द्र	

. बा . . र आ . . . .

२ ३

तार	रि सं
मध्य	४नि नि ४नि ४निधु मगु ॰ म ग मपधम
मन्द्र	

. रे . . म न . मे . . गी . . . .

३

तार		सं
मध्य	पु ॰ ४ग ४ग रि सं ऽ रि ॰ ४	ग म ध नि नि
मन्द्र		

. क ही . . कां दु ख सु ख सो वी

२ १ २

तार	सं रि सं ॰१ सं	सं ॰१ संरिगम
मध्य	नि	धनिधु ॰ पधु
मन्द्र		

ती सो चि ती ई . . . .

३ २ १ २ ३

तार	गु रि सु सु रि गु रि सु सु रि गु	
मध्य	नि ४ नि धु पु मु पु नि	
मन्द्र		

. . . .
२

तार	सु रि सु ४	सु सु • ४
मध्य	नि	ग म ध नि नि गु मु धु नि
मन्द्र		

. . . . दु ख सु ख सो बी ती दु ख सु ख
१ २ ३

तार	सु • ४ सु मु गु १ रि सु रि सु • ४	स सु •
मध्य	नि	नि
मन्द्र		

सो बी ती . सो . बी . ती या . .
१

तार	सु
मध्य	प ग म म ऽ . स रि म प ध ५नि ध प ध ५नि
मन्द्र	

बा र बा र आ . . . .

१ २ ३ २

तार	रि ५ग ५ग रि स स ५ग रि स
मध्य	५नि ध प म प
मन्द्र	

. . . .

तार	
मध्य	प ग म म ऽ स रि म प ध ५नि ध प ध नि
मन्द्र	

बा र बा र आ . . . .

१ २ ३

तार	स रि ग ग रि स रि ग म प म ग
मध्य	
मन्द्र	

२

तार	रि स
मध्य	नि ध प म ग रि स स
मन्द्र	नि

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतर का दूगण सिखलानी.

टेलिफोन नं. ५९२१.
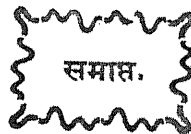
शिक्षण.

हेड ऑफिस:—सॅन्डहर्स्ट रोड,—बम्बाई.

ब्रँच ऑफिसें:—लाहोर, नागपूर, नाशिक, कोल्हापूर.

इस विद्यालय में गायनवादन (तबला, हारमोनियम, दिलरुबा, सतार, फिडल वगैरे) सीखने की व्यवस्था है शिक्षण का समय प्रातःकाल (स्टॅं. टा.) ७ से ९ और सायंकाल को ४ से ८ तक रखा गया है.

इस के अतिरिक्त कुलीन स्त्रियों तथा कन्याओं को सीखलाने के लिये खास प्रबंध है.

घर बैठे शिक्षण:—जिन सज्जन पुरुषोंके आपने घरमें संगीत शिक्षण लेनेकी इच्छा होय उनके लिये
हो सक्ती है.

पुस्तकें:—गायनवादनकी उपयुक्त
मिलती है.

म्युझिकल पार्टी:—विवाह और
वादन की पार्टी मिलती है.

गांधर्व महा विद्